National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(62): 35-38
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

मनीषा
सहायक आचार्या,
एनजीएफ कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग-एंड टेक्नोलॉजी, पलवल

डॉ. मनोज जोशी
सहायक चार्य,
एडवांस्ड इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, पलवल

Correspondence:
मनीषा
सहायक आचार्या,
एनजीएफ कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग-एंड टेक्नोलॉजी, पलवल

वैदिक व अवैदिक काल में शिक्षाशास्त्रियों के दर्शनशास्त्र का वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में तुलनात्मक अध्ययन

मनीषा, डॉ. मनोज जोशी

सारांश – सारांश - भारतीय शिक्षा परंपरा अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रही है, जिसमें वैदिक और अवैदिक दोनों धाराओं ने शिक्षा को अलग-अलग दृष्टिकोण प्रदान किया है। वैदिक शिक्षा आत्मशुद्धि, मोक्ष और धर्मपालन पर केंद्रित थी, जबकि अवैदिक परंपरा (बौद्ध, जैन, चार्वाक) ने तर्क, अनुभव और व्यावहारिकता को महत्व दिया। बौद्ध शिक्षा करुणा, ध्यान और सेवा पर आधारित थी, वहीं जैन शिक्षा ने सत्य, अहिंसा और आत्मशुद्धि को केंद्र में रखा। चार्वाक दर्शन ने प्रत्यक्ष अनुभव और भौतिक सुख को ही सत्य माना है। आस्तिक, विक्रमशिला जैसे वैज्ञानिकों ने भारतीय शिक्षा को विश्वव्यापी पहचान संस्था बनाया। वर्तमान शिक्षा प्रणाली प्रौद्योगिकी और रोजगार मुखाकृति, मूल्य और आत्मिक विकास से दूर की बात है। तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यदि आधुनिक शिक्षा में प्राचीन भारतीय विचारधारा को शामिल किया जाए, तो यह अधिक अर्थशास्त्र, अर्थव्यवस्था और जीवनोपयोगी बन सकता है। इससे विद्यार्थियों के चारित्रिक विकास, सामाजिक उत्तरदायित्व और जीवन-मूल्यों का पुनर्जीवन संभव होगा। प्राचीन शिक्षा की गुरु-शिष्य परंपरा और संवादात्मक पद्धतियाँ आज की परीक्षा-प्रधान प्रणाली का नामकरण किया जा सकता है। नई शिक्षा नीति 2020 इस दिशा में एक सार्थक प्रयास है, जिसमें मातृभाषा में शिक्षा, कौशल विकास और राष्ट्रीय समानता के पुनर्संवर्धन को बल दिया गया है। इस प्रकार प्राचीन और आधुनिक शिक्षा का समन्वय भारतीय शिक्षा को पुनः विश्वगुरु बनाने में सक्षम सिद्ध हो सकता है।

Keywords: वैदिक काल, अवैदिक काल, शिक्षाशास्त्री, वर्तमान शिक्षा प्रणाली, तुलनात्मक अध्ययन।

परिचय : भारतीय संस्कृति में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना या जीविका चलाने का साधन भर नहीं था, बल्कि यह व्यक्ति के चारित्रिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास का माध्यम था। वैदिक कालीन आचार्यों का मानना था कि शिक्षा मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग है, जो उसे धर्म, सत्य और आत्मबोध के मार्ग पर अग्रसर करती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति न केवल स्वयं का उत्थान करता है, बल्कि समाज और राष्ट्र की उन्नति में भी योगदान देता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने विज्ञान, तकनीक और व्यावहारिक जीवन की आवश्यकताओं को केंद्र में रखकर नई दिशाएँ खोली हैं। यद्यपि आज की शिक्षा वैज्ञानिक सोच और रोजगारोन्मुखी दृष्टिकोण से जुड़ी है, फिर भी उसमें मूल्यपरक शिक्षा और नैतिक आदर्शों की आवश्यकता लगातार बनी हुई है। यही कारण है कि वैदिक और अवैदिक काल की शिक्षा परंपराओं का तुलनात्मक अध्ययन आज भी प्रासंगिक है। इस शोधपत्र का उद्देश्य इन्हीं दोनों धाराओं की विशेषताओं और सीमाओं को समझना तथा वर्तमान शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में उनका मूल्यांकन करना है।

वैदिक काल - वैदिक काल भारतीय शिक्षा का सबसे प्राचीन और आधारभूत काल माना जाता है। इस समय में शिक्षा जीवन का लक्ष्य समझी जाती थी, न कि केवल साधन। **पूर्व वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.) –** इस समय शिक्षा का आधार वेद थे। वेदों को ईश्वरीय ज्ञान माना गया और इन्हीं से विभिन्न

शाखाओं व उपशाखाओं का विकास हुआ। शिक्षा मौखिक परंपरा से दी जाती थी और स्मरण, श्रवण, मनन व चिंतन पर बल दिया जाता था। **उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.) –** इस काल में ब्राह्मण ग्रंथों और उपनिषदों की रचना हुई। यहाँ शिक्षा ने अधिक दार्शनिक रूप ग्रहण किया। उपनिषदों में आत्मा, ब्रह्म, मोक्ष और धर्म जैसे गूढ़ विषयों पर विचार प्रस्तुत किए गए।

अवैदिक काल - अवैदिक काल में वे विचारधाराएँ आईं, जिन्होंने वेदों और ब्राह्मण ग्रंथों के अधिकार को अस्वीकार किया। इसमें प्रमुख रूप से बौद्ध, जैन और चार्वाक परंपराएँ आती हैं। **दर्शन काल –** इसी समय षड्दर्शन (सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत) का उदय हुआ। इन दार्शनिकों ने शिक्षा को तार्किक व दार्शनिक आधार प्रदान किया। वैदिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आत्मा की शुद्धि, मोक्ष की प्राप्ति, धर्म पालन और चरित्र निर्माण था। गुरु-शिष्य परंपरा इसका आधार थी, जहाँ शिक्षा केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न होकर जीवन जीने की कला मानी जाती थी। **बौद्ध शिक्षा –** बुद्ध ने शिक्षा को करुणा, मैत्री और अहिंसा पर आधारित किया। ध्यान, संयम और अष्टांगिक मार्ग को शिक्षा का केंद्र माना गया। इसका उद्देश्य दुखों से मुक्ति और निर्वाण प्राप्त करना था। बौद्ध विहार और नालंदा, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय शिक्षा के बड़े केंद्र बने। **जैन शिक्षा –** इसमें सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य और आत्मशुद्धि को महत्व दिया गया। शिक्षा आत्मानुशासन और नैतिक जीवन पर आधारित थी। **चार्वाक दर्शन –** इसने प्रत्यक्ष अनुभव और भौतिक सुख को ही वास्तविक माना। यह धार्मिक और आध्यात्मिक मान्यताओं का विरोधी था और शिक्षा को तर्क तथा व्यवहार से जोड़ता था। अवैदिक शिक्षा ने शिक्षा को धर्म और ईश्वर से अलग कर सामाजिक, नैतिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। इसका लक्ष्य केवल आत्मिक उन्नति नहीं, बल्कि समाज में नैतिकता, करुणा और सहअस्तित्व की भावना को बढ़ाना था।

शोध के उद्देश्य

- वैदिक एवं वैदिक कालीन शिक्षा के उद्देश्यों का अध्ययन।
- आधुनिक शिक्षा प्रणाली की प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन।
- दोनों के तुलनात्मक विश्लेषण द्वारा समानताएँ एवं भिन्नताएँ स्पष्ट करना।
- आधुनिक शिक्षा में वैदिक शिक्षा की प्रासंगिकता को स्थापित करना।
- महर्षि दयानन्द सरस्वती व स्वामी विवेकानन्द जी की शिक्षाओं में समानता को ज्ञात करना।
- महर्षि दयानन्द सरस्वती व स्वामी विवेकानन्द जी की शिक्षाओं में अंतर का अध्ययन करना।
- बौद्ध धर्म व जैन धर्म की शिक्षा व उददेश्य का अध्ययन करना।
- वैदिक व अवैदिक काल की शिक्षा प्रणाली का वर्तमान की शिक्षा प्रणाली में तुलनात्मक अध्ययन करना।

अनुसंधान पद्धति

यह शोध एक तुलनात्मक व गुणात्मक अध्ययन (**Comparative and Qualitative Study**) है। इसमें वैदिक, अवैदिक एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रयुक्त दर्शनशास्त्रों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। शोध में ऐतिहासिक व दार्शनिक दृष्टिकोण अपनाया गया है।

शोध परिकल्पना

1.वैदिक एवं आधुनिक शिक्षा दोनों का उद्देश्य व्यक्ति और समाज का उत्थान है।

2.शिक्षक-शिष्य संबंध वैदिक काल की अपेक्षा आधुनिक शिक्षा में औपचारिक हो गया है।

3.अनुशासन एवं मूल्य शिक्षा आधुनिक प्रणाली में कमज़ोर है, जबकि वैदिक शिक्षा का मूल आधार था।

4.आधुनिक शिक्षा में वैदिक मूल्य शिक्षा का समावेश आवश्यक एवं उपयोगी है।

अध्ययन का विश्लेषण और व्याख्या

महर्षि दयानन्द सरस्वती व स्वामी विवेकानन्द जी की शिक्षाओं में समानताएँ

क्षेत्र	महर्षि दयानंद	स्वामी विवेकानंद	समानता
धार्मिक सुधार	वैदिक धर्म की ओर लौटने पर बल	वेदांत और अद्वैत दर्शन पर ज़ोर	दोनों ने हिंदू धर्म की मूल शिक्षाओं को पुनर्जीवित करने की कोशिश की
समाज सुधार	अंधविश्वास,मूर्तिपूजा, जातिवाद के विरोधी	छुआछूत,जातिवाद, सामाजिक अस-मानता के विरोधी	दोनों ने समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ आवाज़ उठाई
शिक्षा का महत्व	शिक्षा को आत्मज्ञान और चरित्र निर्माण का साधन माना	शिक्षा को आत्म-शक्ति और आत्मविश्वास के विकास का साधन कहा	दोनों ने शिक्षा को सर्वोपरि माना
देशभक्ति	भारतीय संस्कृति और गौरव को महत्व	भारत को "जगद्गुरु" बनाने का सपना	दोनों ने देश की सांस्कृतिक पहचान पर गर्व किया
नारी शिक्षा	स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार	नारी उत्थान को समाज सुधार का प्रमुख भाग माना	स्त्रियों की समानता और शिक्षा के समर्थक

महर्षि दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द, दोनों महान विभूतियों की शिक्षाओं में गहन समानता है। उनकी शिक्षाएँ हमें सिखाती हैं कि ज्ञान, विवेक और सत्य के मार्ग पर चलना चाहिए। धर्म का सही अर्थ मानवता की सेवा और सामाजिक सुधार है। शिक्षा ही समाज को जाग्रत और सशक्त बना सकती है। अंधविश्वास, जातिप्रथा और अन्य सामाजिक बुराइयों का त्याग कर एक समरस समाज का निर्माण करना चाहिए। स्वदेश प्रेम और आत्मगौरव के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती व स्वामी विवेकानन्द जी की शिक्षाओं में प्रमुख अंतर

क्षेत्र	महर्षि दयानंद सरस्वती	स्वामी विवेकानंद
धार्मिक दृष्टिकोण	कट्टर वैदिक परंपराओं के समर्थक; केवल वेदों को ही प्रमाण माना	वेदांत, योग और भक्ति मार्ग के साथ-साथ अन्य धर्मों के तत्वों को भी स्वीकार
ईश्वर की धारणा	निर्गुण, निराकार ईश्वर में विश्वास	अद्वैतवाद: आत्मा और परमात्मा एक हैं (ब्रह्म और आत्मा की एकता)
मूर्तिपूजा पर विचार	तीव्र विरोधी- मूर्तिपूजा को अंधविश्वास माना	पूरी तरह विरोध नहीं किया- मूर्तिपूजा को साधना का एक माध्यम माना
संगठन और आंदोलन	आर्य समाज की स्थापना (1875) -वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना हेतु	रामकृष्ण मिशन की स्थापना (1897) — सेवा, शिक्षा, आध्यात्मिकता के लिए
विदेश यात्रा	कभी विदेश नहीं गए - विदेशी संस्कृति का विरोध किया	विश्व धर्म महासभा (1893) में शिकागो गए — भारतीय विचारों का प्रचार किया
भाषा शैली	कट्टर, आलोचनात्मक -रूढ़ियों के विरुद्ध तीखे शब्दों में	संयमित, समन्वयकारी — सब धर्मों की अच्छाई पर बल

महर्षि दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द दोनों महान विभूतियाँ थीं जिन्होंने भारतीय समाज को दिशा देने का कार्य किया। दोनों के कार्यों और विचारों में समान लक्ष्य होने के बावजूद, उनके द्वारा अपनाए गए मार्ग भिन्न थे। महर्षि दयानन्द ने शास्त्र सम्मत शुद्ध वैदिक धर्म की स्थापना पर बल दिया, जबकि स्वामी विवेकानन्द ने धर्म को एक व्यापक मानवतावादी दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया। इन दोनों महापुरुषों के विचार आज भी हमें यह सिखाते हैं कि भारत की उन्नति के लिए जहाँ एक ओर अपनी प्राचीन जड़ों से जुड़ना आवश्यक है, वहीं दूसरी ओर वैश्विक दृष्टिकोण अपनाकर मानवता की सेवा भी उतनी ही अनिवार्य है। दोनों की शिक्षाएँ वर्तमान युग के लिए अत्यंत प्रासंगिक और प्रेरणादायक हैं।

बौद्ध धर्म और जैन धर्म में समानताएँ (Similarities):

विषय	समानताएँ
उद्भव	दोनों धर्म 6वीं शताब्दी ई.पू. में भारत में जन्मे
उद्देश्य	आत्मा की मुक्ति/मोक्ष प्राप्त करना
अहिंसा	दोनों धर्मों में अहिंसा पर विशेष बल
वेदों की अस्वीकृति	दोनों वेदों को ईश्वरकृत नहीं मानते
कर्म और पुनर्जन्म	दोनों में कर्म व पुनर्जन्म के सिद्धांत हैं
धार्मिक सुधार	दोनों ने ब्राह्मणवाद, यज्ञ, बलि और जाति-व्यवस्था की आलोचना की
ध्यान और तपस्या	आत्मशुद्धि हेतु ध्यान और तप पर ज़ोर

बौद्ध धर्म और जैन धर्म में अंतर (Differences):

विषय	बौद्ध धर्म	जैन धर्म
आत्मा का सिद्धांत	आत्मा को अस्वीकार करता है (अनात्मवाद)	आत्मा के अस्तित्व को मान्यता
तपस्या	मध्यम मार्ग का समर्थन करता है	कठोर तपस्या और आत्मसंयम पर ज़ोर
संस्थापक	गौतम बुद्ध	ऋषभदेव (प्रारंभिक), महावीर (व्यवस्थित)
मोक्ष का मार्ग	अष्टांगिक मार्ग	त्रिरत्न व पंच महाव्रत
संप्रदाय	हीनयान, महायान	श्वेतांबर, दिगंबर
मांसाहार	महायान में मांसाहार की छूट (कुछ स्थितियों में)	पूर्णतः शाकाहारी और मांसाहार का सख्त विरोध
देवताओं की भूमिका	गौतम बुद्ध को "बोधिसत्व" व पूजा योग्य माना	तीर्थंकरों की पूजा, लेकिन वे ईश्वर नहीं

बौद्ध धर्म और जैन धर्म दोनों ने भारतीय समाज में धर्म और नैतिकता के आदर्श प्रस्तुत किए, जिनमें अहिंसा, सत्य, समाजवाद और आत्म-ज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान था। इन धर्मों की शिक्षाओं ने न केवल भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया, बल्कि सम्पूर्ण विश्व में मानवता और करुणा के उच्चतम आदर्शों को फैलाया। बौद्ध धर्म और जैन धर्म दोनों ही आंतरिक शांति और मानसिक संतुलन के प्रति अत्यधिक जागरूकता का प्रचार करते हैं। दोनों धर्मों में अहिंसा और सत्य के सिद्धांत पर विशेष बल दिया गया है। इन धर्मों का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत मोक्ष नहीं, बल्कि समाज और समग्र मानवता की भलाई है। बौद्ध धर्म ने दुःख के निवारण और निर्वाण की बात की, जबकि जैन धर्म ने आत्म-ज्ञान और मोक्ष के रास्ते को बताया। बौद्ध धर्म और जैन धर्म की शिक्षाएँ आज भी अत्यधिक प्रासंगिक हैं। यदि हम इन धर्मों के सिद्धांतों को अपने जीवन में आत्मसात करें, तो हम न केवल अपनी आत्मा को शुद्ध कर सकते हैं, बल्कि समाज में शांति और सौहार्द की स्थापना भी कर सकते हैं।

वैदिक काल और वर्तमान काल का तुलनात्मक अध्ययन

विषय	वैदिक काल	वर्तमान काल
समाज व्यवस्था	वर्ण व्यवस्था (कर्म आधारित)	जाति व्यवस्था (जन्म आधारित)
शिक्षा प्रणाली	गुरुकुल प्रणाली, मौखिक शिक्षा	विद्यालय/कॉलेज प्रणाली, लिखित और डिजिटल शिक्षा
आर्थिक व्यवस्था	कृषि और पशुपालन पर आधारित	औद्योगिक और सेवा क्षेत्र पर आधारित
राजनीतिक व्यवस्था	राजा, सभा और समिति द्वारा शासन	लोकतांत्रिक शासन प्रणाली
धार्मिक जीवन	यज्ञ, देवपूजा, प्रकृति पूजा	मंदिर पूजा, विभिन्न पंथों का उदय
स्त्री की स्थिति	उच्च, शिक्षित, यज्ञों में भागीदारी	मिश्रित स्थिति, शहरी क्षेत्रों में उन्नति परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित
विज्ञान/तकनीक	खगोल विज्ञान, गणित, चिकित्सा की शुरुआत	उन्नत तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आदि
नैतिक मूल्य	सत्य, धर्म, अहिंसा, तप	व्यावसायिकता, प्रति-स्पर्धा, व्यक्तिगत उन्नति

इस अध्याय के माध्यम से यह सामने आता है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली को अधिक नैतिक, आत्मकेन्द्रित और संतुलित बनाने के लिए वैदिक काल की शिक्षण परंपराओं और सान्देव के दार्शनिक दृष्टिकोण से प्रेरणा लेना नितांत आवश्यक है। दोनों प्रणालियों का संयोजन ही भावी शिक्षा की दिशा को समृद्ध कर सकता है।

अवैदिक काल और वर्तमान काल में मुख्य तुलनात्मक बिंदु

विषय	अवैदिक काल	वर्तमान काल
धार्मिक परिप्रेक्ष्य	जैन धर्म, बौद्ध धर्म का उदय; कर्म, मोक्ष पर ज़ोर	विविध धर्म; धर्मनिरपेक्षता; व्यक्तिगत आस्था की स्वतंत्रता
सामाजिक संरचना	वर्ण व्यवस्था प्रमुख; स्त्रियों की स्थिति सीमित	समानता की बात; महिला सशक्तिकरण; आरक्षण प्रणाली
राजनीतिक ढांचा	राजतंत्र, साम्राज्य जैसे मौर्य, गुप्त	लोकतंत्र, संविधान आधारित शासन
शिक्षा प्रणाली	गुरुकुल, मौखिक परंपरा; तक्षशिला, नालंदा	डिजिटल शिक्षा, विद्यालय, विश्वविद्यालय
आर्थिक प्रणाली	कृषि आधारित, श्रम विभाजन	वैश्विक बाजार, उद्योग, तकनीकी नवाचार
तकनीकी विकास	हस्तशिल्प, शिल्पकला, लौह प्रौद्योगिकी	इंटरनेट, AI, अंतरिक्ष विज्ञान
नारी की भूमिका	सीमित अधिकार; शिक्षा और स्वाधीनता में बाधाएं	शिक्षा, राजनीति, रक्षा और व्यापार में भागीदारी
समाज में सुधार आंदोलन	बुद्ध, महावीर जैसे सुधारक	सामाजिक न्याय, महिला आंदोलन, LGBTQ+ अधिकार

अवैदिक काल में धर्म और दर्शन की गहरी सोच थी, जिसने समाज को एक नैतिक दिशा दी। परंतु सामाजिक असमानताएं भी मौजूद थीं। वर्तमान काल में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और वैज्ञानिक सोच को प्राथमिकता मिल रही है, लेकिन आधुनिकता के साथ कुछ नई समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं जैसे मानसिक तनाव, पर्यावरणीय संकट इत्यादि।

अवैदिक काल और वर्तमान काल, दोनों अपनी-अपनी विशेषताओं और सीमाओं के साथ अलग-अलग युगों के प्रतिनिधि हैं। जहाँ अवैदिक काल ने समाज के धार्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक आधार को मजबूत किया, वहीं वर्तमान युग तकनीक, समानता, स्वतंत्रता और वैश्विकता का प्रतीक बन चुका है। इन दोनों युगों का अध्ययन यह दिखाता है कि समाज समय के साथ बदलता है, परंतु उसके मूल तत्व (जैसे सत्य, धर्म, न्याय) स्थायी रहते हैं।

निष्कर्ष – वैदिक और अवैदिक काल की शिक्षा केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया न होकर मानवता, नैतिकता, आत्मज्ञान और चरित्र निर्माण का सशक्त साधन थी। वैदिक शिक्षा का केंद्र आत्मशुद्धि, मोक्ष और धर्मपालन रहा, जबकि अवैदिक शिक्षा ने अनुभव, तर्क, करुणा, अहिंसा और सामाजिक कल्याण को महत्व दिया। इन दोनों धाराओं

का मूल उद्देश्य व्यक्ति के बौद्धिक, चारित्रिक और आध्यात्मिक विकास के साथ समाज को आदर्श दिशा प्रदान करना था। इसके विपरीत वर्तमान शिक्षा प्रणाली मुख्यतः परीक्षा, अंक और रोजगारोन्मुख दृष्टिकोण पर आधारित होकर नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों से विमुख हो गई है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि आधुनिक शिक्षा में यदि वैदिक और अवैदिक शिक्षा के नैतिक, आध्यात्मिक और मानवीय मूल्यों का समावेश किया जाए तो शिक्षा अधिक संतुलित, जीवनोपयोगी और मानवीय बन सकती है। महर्षि दयानंद सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द ने भी यह प्रतिपादित किया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जीविकोपार्जन नहीं बल्कि चरित्र निर्माण और आत्मविकास है। आज की आवश्यकता यही है कि प्राचीन और आधुनिक शिक्षा का समन्वय कर ऐसा तंत्र विकसित किया जाए जो विद्यार्थियों को न केवल ज्ञानवान बल्कि जिम्मेदार, नैतिक और संवेदनशील नागरिक बनाए। इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्राचीन भारतीय शिक्षा परंपरा आज भी उतनी ही प्रासंगिक है और उसके मूल्य वर्तमान शिक्षा प्रणाली को नई दिशा और वैश्विक प्रतिष्ठा प्रदान करने में सक्षम हैं।

भविष्य की दिशा – इस शोध से यह स्पष्ट हुआ कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा और चरित्र निर्माण को पुनः महत्व दिया जाना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित न रहकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास होना चाहिए। गुरु-शिष्य परंपरा के मूल्य जैसे श्रद्धा, अनुशासन और आत्मीयता को पुनर्जीवित कर शिक्षा को अनुभव और संस्कार का माध्यम बनाना आवश्यक है। तकनीकी और डिजिटल शिक्षा के साथ योग, ध्यान और नैतिकता आधारित शिक्षा को भी समान महत्व दिया जाना चाहिए। वैदिक और अवैदिक शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धांतों को आधुनिक शिक्षा पद्धति में समाहित करना तथा विवेकानंद और दयानंद जैसे महान विचारकों की शिक्षाओं को पाठ्यक्रम में शामिल करना समय की मांग है। भौतिकवादी दृष्टिकोण को संतुलित करने हेतु आत्मिक और आध्यात्मिक विकास के कार्यक्रम भी अनिवार्य किए जाने चाहिए। यदि इन मूलभूत सिद्धांतों का समावेश किया जाए, तो भविष्य में शिक्षा एक सशक्त माध्यम बनकर नैतिक, संवेदनशील और जागरूक समाज का निर्माण कर सकती है।

संदर्भ सूची:-

1.(ए. कुमार साह) 2023 "ऋग्वेद काल में महिलाओं की स्थिति" एंथ्रोपो – इंडियालॉग्स

2.(श्रीमती सोनल मलिक) 2022 "वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति." जर्नल ऑफ पॉजिटिव स्कूल साइकोलॉजी

3.(प्रसन्न कुमार ऐथल) 2022 "वैदिक साहित्य और कृषि" नेशनल जर्नल ऑफ हिंदी एंड संस्कृत रिसर्च

4.(जे एल गारफील्ड) 2022 "बौद्ध नैतिकता: एक दार्शनिक अन्वेषण" ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

5.(अंकित तौमर) 2021 "दयानन्द सरस्वती" आधुनिक भारतीय विचार का पुनर्विलोकन

6.(अपर्णा लांजेवार बोस) 2019 "बुद्ध, कबीर और गुरु नानक की तुलनात्मक कविताओं की ओर एक धर्मनिरपेक्षः लोकतांत्रिक परिप्रेक्ष्य से।" रेविस्टा साइंटिफिका आर्बिट्राडा डे ला फंडासिओन मंटेक्लारा वॉल्यूम

7.(जहूर अहमद राथर) 2015 "आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के वैदिक आदर्शों की प्रसगिंकता," आईओएसआर जर्नल ऑफ हामैनिटीज एंड सोशल साइंस

8.(Dr. Mohammad sayid Bhat) 2016 Education philosophy of Swami Vivekanand, Journal of Research पृष्ठ संख्या 133 to 139.

9."History of Ancient India, Vol. I" – By R.S. Sharma
- *Publisher:* Oxford University Press
- *उपयोग:* वैदिक समाज, अर्थव्यवस्था, और संस्कृति के ऐतिहासिक दृष्टिकोण के लिए।

10."The Vedas" – Translated by Ralph T.H. Griffith

a. *उपयोग:* ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद का अंग्रेजी अनुवाद – वैदिक धार्मिक विचारधारा और भाषा के लिए मूल स्रोत।

11."Early India: From the Origins to AD 1300" – By Romila Thapar

b. *Publisher:* University of California Press

c. *उपयोग:* वैदिक काल के विकास, सामाजिक संरचना, और ऐतिहासिक संदर्भों के लिए।

12."A History of Sanskrit Literature" – By Arthur A. Macdonell

d. *उपयोग:* वैदिक साहित्य, ब्राह्मण ग्रंथों, उपनिषदों आदि की समझ के लिए।

13."Vedic Culture: The Difference It Can Make in Your Life" – By Stephen Knapp

e. *उपयोग:* वैदिक संस्कृति के व्यावहारिक और दार्शनिक पहलुओं को समझने के लिए।

14."The Cultural Heritage of India – Volume I" – Published by Ramakrishna Mission

f. *उपयोग:* वैदिक धर्म, दर्शन, साहित्य और संस्कृति का व्यापक विश्लेषण।

15."Rigveda: A Historical Analysis" – By Shrikant G. Talageri

g. *उपयोग:* ऋग्वेद का ऐतिहासिक और भाषिक विश्लेषण।

16.Rustamkulovna, S. T. (2024). The History of Indian Culture and Stages of Development. Journal of Learning on History and Social Sciences, 1(12), 69-76.

17.Chandler, Stuart, 2004. Establishing a Pure Land on Earth: The Foguang Buddhist Perspective on Modernization and Globalization. Honolulu: University of Hawai'i Press.

18.2001. ÒBuddhism in Australia. A Bibliography,Ó updated version, online at http:// www.spuler. org/ ms/biblio.htm.

19. 1999. ÒNight-Stand Buddhists and Other Creatures,Ó in American Buddhism. Methods and Findings in Recent Scholarship, eds. Duncan Ryåken Williams and Christopher Queen. Richmond: Curzon, 71-90.

20.2004. 'Jains, caste and hierarchy in north Gujarat', Contributions to Indian Sociology (n. s.) 38/1–2, 73–112.

21.2002a. 'Bhakti in the early Jain tradition: understanding devotional religion in South Asia', History of Religions 42, 59–86.

22.2000. 'On polytropy: or the natural condition of spiritual cosmopolitanism in India: The Digambar Jain case', Modern Asian Studies 34/4, 831–61.

23.1989. 'Liberation and wellbeing: a study of the ¸vetammbar Mumrtipumjak Jains in North Gujarat', PhD dissertation, Harvard University (cited as LW).

24.Ramanujan, A. K. 1999. "Three Hundred Ramayanas: Five Examples and Three Thoughts on Translation." In Collected Essays of A. K. Ramanujan, edited by Vinay Dharwadkar, 131–60. Delhi: Oxford University Press.